



संजय कुमार

मऊ जनपद में व्यापारिक कृषि प्रतिरूप का एक प्रतीक अध्ययन

शोध अध्येता- भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ०प्र०) भारत

Received- 04.03.2022, Revised- 07.03.2022, Accepted - 11.03.2022 E-mail: sanjayrawat910@gmail.com

साक्षरता: - ग्रामीण विकास में व्यापारिक कृषि की भूमिका के मूल्यांकन के पूर्व अध्ययन क्षेत्र में कृषि व्यावसायीकरण की वर्तमान स्थिति का आंकलन आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र के अन्तर्गत मऊ जनपद में व्यापारिक कृषि की स्थिति का आंकलन द्वितीयक आँकड़ों की सहायता से किया गया है। कृषि व्यापारीकरण के अन्तर्गत उन सभी कृषिगत क्रियाओं को सम्मिलित किया गया है, जिनका उद्देश्य अधिकाधिक नकद आय प्राप्त करना है। इसके अन्तर्गत फसलों का व्यापारिक उत्पादन, दुग्ध पशुपालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, मत्स्य पालन आदि को रखा गया है। कृषि व्यापारीकरण प्रतिरूप का विश्लेषण शस्यगत एवं शस्येतर दो भिन्न आयनों के अन्तर्गत किया गया है।

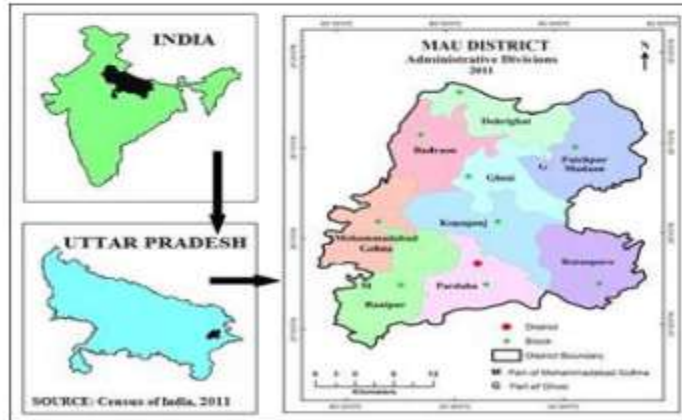
कुंजीपूत शब्द- व्यापारिक कृषि, मूल्यांकन, कृषि व्यावसायीकरण, आंकलन, द्वितीयक आँकड़ों, साक्षात्कार।

आँकड़ा स्रोत एवं विधि तंत्र- प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों का संग्रह शोधकर्ता द्वारा व्यक्तिगत रूप से अध्ययन क्षेत्र में जाकर प्राप्त किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों का संग्रह विभिन्न प्रकाशित तथा पूर्व संग्रहित स्रोतों से किया गया है। जिनमें अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग, कृषि विभाग, उद्यान विभाग, जनगणना विभाग आदि के आंकड़े महत्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही कुछ शोध ग्रन्थों से भी सूचनाएँ एकत्र की गयी हैं। इसके अतिरिक्त इंटरनेट से भी प्राप्त सूचनाओं एवं आँकड़ों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के अन्तर्गत व्यावसायिक कृषि से सम्बंधित आँकड़े विभिन्न स्रोतों जैसे- समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, शोध पत्रों एवं संदर्भ ग्रन्थों से एकत्रित किया गया है। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों का वर्गीकरण तथा सारणीयन करके सांख्यिकीय मात्रात्मक विधियों के प्रयोग द्वारा विभिन्न तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। आरेख एवं मानचित्र के माध्यम से तथ्यों का सामान्यीकरण किया गया है तथा प्राथमिक आँकड़ों के अन्तर्गत क्षेत्र में जाकर प्रत्यक्ष साक्षात्कार विधि से मऊ जनपद के विकासखण्ड स्तर पर प्रतिचयन के द्वारा चयनित गावों से आँकड़े एकत्र कर विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र- मऊ जनपद उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में मध्य गंगा मैदान में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र गंगा एवं घाघरा के दोआब में स्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तार 24047' से 26017' उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 83017' से 84052' पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तृत है। जनपद की उत्तरी सीमा गाजीपुर एवं पश्चिमी सीमा आजमगढ़ जनपद से निर्धारित होती है। घाघरा एवं टोंस यहाँ की दो प्रमुख नदियाँ हैं। घाघरा नदी इसको गोरखपुर एवं देवरिया से अलग करती है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1714.77 वर्ग किलोमीटर है। इसकी उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 53 किलोमीटर एवं पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 50 किलोमीटर है। अध्ययन क्षेत्र में 4 तहसीलें, 9 विकास खण्ड, 92 न्याय पंचायत, 598 ग्राम सभा एवं 11 पुलिस स्टेशन हैं। अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या 2197006 है। इस क्षेत्र की अधिकांश जनसंख्या 1702635 ग्रामीण है, जो कुल जनसंख्या की 77.49 प्रतिशत है। यहाँ जनसंख्या घनत्व 1287 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है तथा यहाँ का लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर 978 स्त्रियों हैं जबकि साक्षरता 73.10 प्रतिशत है।





व्यापारिक फसलों का उत्पादन एवं वितरण प्रतिरूप

कृषि व्यापारीकरण के शस्यगत आयाम के अन्तर्गत व्यावसायिक उद्देश्य से उगायी जाने वाली फसलों की विशेषताओं, क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण किया गया है, जिससे यह स्पष्ट हो सका है कि विभिन्न भौगोलिक दशाओं से युक्त क्षेत्र में इन फसलों के उत्पादन स्तर का क्षेत्रीय आयाम क्या है? अध्ययन क्षेत्र में व्यावसायिक दृष्टि से उगायी जाने वाली फसलों में विविध प्रकार की शाक-सब्जियाँ, गन्ना, मक्का (रबी एवं जायद), खरबूज, मूँगफली एवं अन्य दलहनी और तिलहनी फसलें मुख्य हैं।

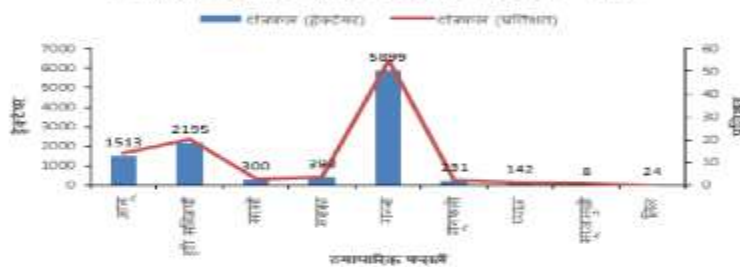
तालिका 1

व्यापारिक फसल क्षेत्र में विभिन्न फसलों का अंशदान

फसल	क्षेत्रफल (है०)	व्यापारिक फसल क्षेत्र से प्रतिशत
आलू	1513	14.13
हरी सब्जियाँ	2195	20.53
सरसों	300	2.80
मक्का	393	3.67
गन्ना	5899	55.10
मूँगफली	231	2.16
प्याज	142	1.33
सुरजमुखी	8	0.77
तिल	24	0.22

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका, मऊ जनपद, 2020

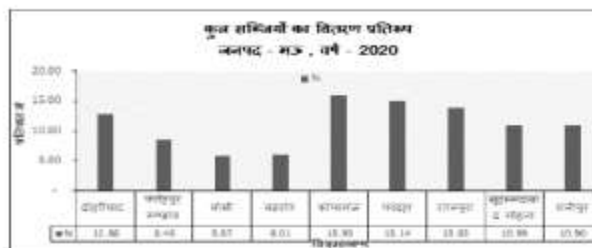
व्यापारिक फसल क्षेत्र की विभिन्न जनपद - मऊ, वर्ष - 2020



तालिका सं० 1 से स्पष्ट है, कि अध्ययन क्षेत्र में उगायी जाने वाली व्यापारिक फसलों में विविधता है, परन्तु उनके क्षेत्रीय विस्तार में काफी अन्तर मिलता है। इन व्यापारिक फसलों में सर्वाधिक अंश गन्ना (55.10 प्रतिशत) का है तथा 20.50 प्रतिशत हरी सब्जियाँ और आलू (14.13 प्रतिशत) का है। इस प्रकार आलू को भी यद्यपि सब्जी के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाय तो व्यापारिक कृषि में सब्जी का योगदान 34.66 प्रतिशत हो जाता है। दूसरी व्यापारिक फसल गन्ना है। मुख्यतः पहले गन्ना, गुड़ के लिए उगायी जाती थी परन्तु अब गन्ना की खेती चीनी, गुड़, आदि उत्पादों के लिए होने लगी है। अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में आज भी गन्ना का उत्पादन प्रमुखता से होता है। गन्ना शुद्ध रूप से व्यापारिक फसल है, जिसकी कृषि प्रायः मध्यम और बड़े कृषक करते हैं। अब घोसी एवं चीनी मिल के संचालन से गन्ना क्षेत्र 55.10 प्रतिशत हो गया है। सरसों नकदी फसल होते हुए भी इसका उत्पादन विक्रय की दृष्टि से कम, परन्तु उपयोग के दृष्टि से अधिक होता है। मक्का यद्यपि खाद्यान्न फसल है फिर भी हाल के वर्षों में जायद ऋतु में नकदी फसल के रूप में इसकी कृषि की प्रवृत्ति बढ़ी है।

इसी प्रकार नकदी फसल क्षेत्र के 21.16 प्रतिशत मूँगफली 1.33 प्रतिशत पर प्याज की खेती की जाती है। मक्का के अधीन कुल नकदी शस्य का क्षेत्रफल 3.67 प्रतिशत है। अन्य नकदी फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र 1 प्रतिशत से भी कम है।

अ. सब्जियाँ- व्यापारिक कृषि में सब्जी कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है (तालिका सं० 3.1) अध्ययन क्षेत्र में कुल नकदी फसलों में 26.94 प्रतिशत भाग केवल सब्जियों का है





तालिका 2
सब्जियों क्षेत्र का श्रेणीगत वितरण

श्रेणी	शुद्ध कृषि क्षेत्र	विकास खण्ड
अति न्यून	01 से कम	23.94
न्यून	01-04	33.09
मध्यम	04-07	20.45
उच्च	07-10	6.33
अति उच्च	10 से अधिक	16.19

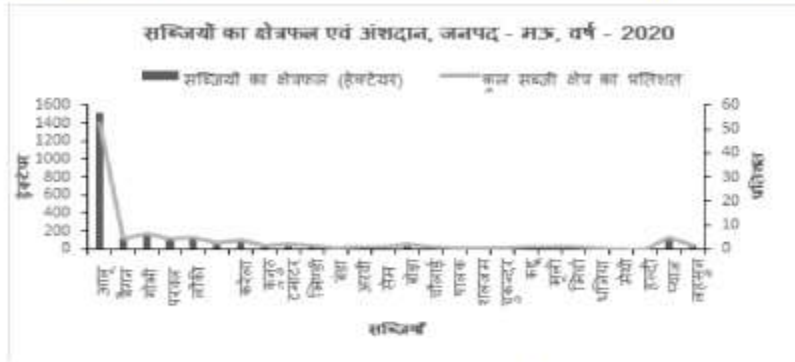
खरीफ ऋतु में सब्जियों का उत्पादन विकास खण्ड मुख्यालय के आस-पास मुख्य परिवहन मार्ग गोरखपुर वाराणसी के सहारे मिलता है। यह क्षेत्र अपेक्षाकृत उच्च है, जिससे जल जमाव की आशंका नहीं रहती इस क्षेत्र में उगायी जाने वाली मुख्य सब्जियाँ लौकी, करैली, बैंगन, मिन्डी, बोड़ा, परवल, कुंदरू आदि है (तालिका सं0 2)। जबकि रबी ऋतु में आलू, फूल गोभी, पत्ता गोभी, प्याज आदि है। जायद ऋतु में अधिक सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए सब्जी क्षेत्र वही मिलता है, जहाँ पर्याप्त और भरोसेमन्द सिंचाई सुविधा उपलब्ध है।

खरीफ ऋतु की सब्जियाँ-खरीफ ऋतु में सब्जियों का उत्पादन जिला मुख्यालय के आस-पास मुख्य परिवहन मार्ग गोरखपुर-वाराणसी के सहारे मिलता है। यह क्षेत्र अपेक्षाकृत उच्च है, जिससे जल जमाव की आशंका नहीं रहती इस क्षेत्र में उगायी जाने वाली मुख्य सब्जियाँ लौकी, करैला, बैंगन, मिन्डी, बोड़ा, परवल, सरपुतिया, बण्डा, अरबी, नेनुआ, कुनुरु आदि है। इसमें प्रमुख विकासखण्ड अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में उत्तर से दक्षिण की ओर एक पट्टी के रूप में मिलता है। इस क्षेत्र की भौगोलिक दशाएं मुख्यतः सुप्रवाहित धरातल, बलुई दोमट मिट्टी, सिंचाई की सुविधा, परिवहन की सुविधा, विपणन की सुविधा आदि सब्जी उत्पादन के लिए अनुकूल है।

तालिका संख्या : 3
कुल सब्जी क्षेत्र में विभिन्न सब्जियों का अंशदान

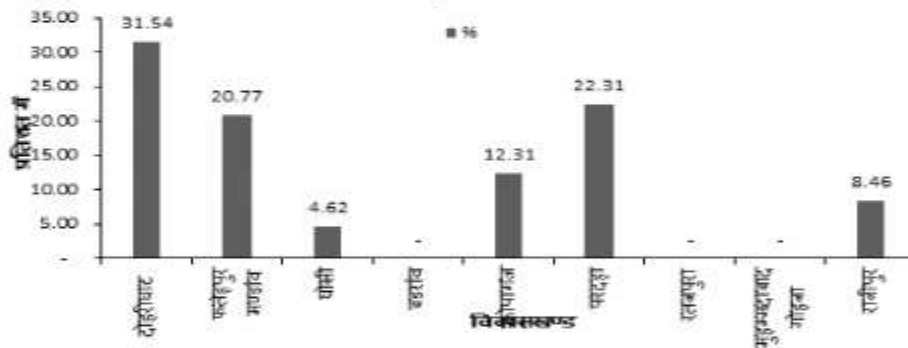
सब्जी का नाम	क्षेत्रफल (हे0)	कुल सब्जी क्षेत्र का प्रतिशत
आलू	1513	52.46
बैंगन	120	4.16
गोभी	180	6.24
परवल	130	4.51
लौकी	140	4.85
सरपुतिया (तराई)	81	2.81
करैला	102	3.53
कुनुरु	45	1.56
टमाटर	61	2.11
मिन्डी	51	1.77
बण्डा	18	0.62
अरबी	22	0.76
सेम	23	0.79
बोड़ा	64	2.22
चौलाई	24	0.83
पालक	15	0.52
शलजम	6	0.21
चुकन्दर	9	0.31
कद्दू	29	1.01
मूली	26	0.90
मिर्चा	28	0.97
धनिया	6	0.21
मेथी	4	0.14
हल्दी	2	0.07
प्याज	142	4.92
लहसून	43	1.49
योग	2884	100.00

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका, मऊ जनपद, 2020



पश्चिमी भाग तथा दक्षिणी भाग में सब्जी की खेती बहुत कम होती है। इस ऋतु में सबसे अधिक क्षेत्र दोहराघाट में (31.54) प्रतिशत एवं सबसे कम क्षेत्र बड़रांव, रतनपुरा मुहम्मदाबाद गोहना में 0.00 प्रतिशत है। इस ऋतु में औसत से अधिक 31.54 प्रतिशत है। इस ऋतु में औसत से अधिक 31.54 प्रतिशत दोहराघाट विकासखण्ड में जबकि औसत से कम पाँच विकास खण्डों फतेहपुर मंडाव, घोसी, एवं रानीपुर विकासखण्डों में पाया जाता है। इन क्षेत्रों में रतनपुरा एवं मुरादाबाद गोहवा विकासखण्डों है। (तालिका सं0 3) खरीफ ऋतु के सब्जियों के क्षेत्र का श्रेणीगत वितरण को देखा जाय तो 55.55 प्रतिशत विकासखण्ड 10 प्रतिशत से कम शुद्ध कृषि क्षेत्र पर 11.11 प्रतिशत विकासखण्डों में 10 से 20 प्रतिशत शुद्ध कृषि क्षेत्र पर और 33.33 प्रतिशत विकास खण्डों में 20 प्रतिशत से अधिक शुद्ध कृषि क्षेत्र पर सब्जियों की खेती की जाती है।

खरीफ की सब्जियों का वितरण प्रतिरूप
जनपद - मऊ, वर्ष - 2020



तालिका 4
खरीफ ऋतु में सब्जियों का श्रेणीगत वितरण

वर्ग	शुद्ध कृषि क्षेत्र	संख्या	प्रतिशत अंश
ग्रेजु	10 से कम	5	55.55
मध्यम	10-20	1	11.11
उच्च	20 से अधिक	3	33.33
	योग	9	100





कुनुरु— कुनुरु की खेती खरीफ ऋतु में की जाती है। इसकी खेती में श्रम पूँजी सिंचाई की अतिआवश्यकता होती है। इसकी खेती बलुई दोमट में अच्छी होती है। अध्ययन क्षेत्र में इसकी खेती मचान बनाकर किया जाता है। इससे कुनुरु की सब्जी में कीड़ों का प्रकोप कम लगता है। इसके नीचे अन्य सहगामी फसलों की बुवाई करके दोहरा लाभ प्राप्त करते हैं। अल्प अवधि (3 माह) में तैयार होने वाली इस फसल की कृषि अधिक लाभदायक सिद्ध हो रही है। एक एकड़ की खेती करने में औसतन सम्पूर्ण लागत 5360 ₹ आती है और उत्पादन 54000 ₹ का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 48640 ₹ की शुद्ध आय तीन माह में प्राप्त होती है। इसके उत्पादन क्षेत्र में प्रायः प्रत्येक किसान सीमित भूमि पर ही अन्य सब्जियों के साथ टमाटर की कृषि करता है। अध्ययन क्षेत्र में कुनुरु का कुल क्षेत्रफल 45 हेक्टेयर है। जो सम्पूर्ण सब्जी क्षेत्र का 1.56 प्रतिशत है, परन्तु कुनुरु की कृषि सभी विकासखण्डों में नहीं होती है। इसका वितरण प्रायः वहीं मिलता है, जहाँ रबी ऋतु की अन्य सब्जियों की कृषि होती है। यह वह क्षेत्र है, जो दोहरीघाट, फतेहपुर मण्डाव एवं बड़रांव विकासखण्ड में पड़ता है तथा इस क्षेत्र से ही प्रमुख सड़क मार्ग गुजरता है, साथ ही इसी क्षेत्र से मुख्य सड़क से कई ग्रामों के लिए ग्रामीण सड़कें निकलती हैं। स्थानीय दोहरीघाट सब्जी मण्डी मधुबन एवं घोसी सब्जी मण्डी के अतिरिक्त बड़रांव, फतेहपुर मण्डाव, मर्यादपुर आदि कस्बों में इसका विक्रय होता है। इस क्षेत्र में सिंचाई की भी अपेक्षाकृत बेहतर सुविधा उपलब्ध है। जिसके कारण स्थानीय ग्रामों में कुनुरु की खेती की जाती है।

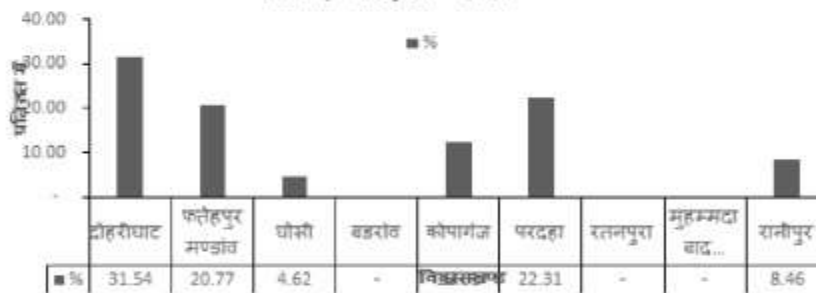
तालिका सं 5

मऊ जनपद में ऋतु के आधार पर सब्जियों का वितरण

विकासखण्ड	कुल सब्जियों का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	रबी की सब्जियों का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	खरीफ की सब्जियों का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	जायद की सब्जियों का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	आलू का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)
दोहरीघाट	12.86	11.13	31.54	15.51	10.10
फतेहपुर मण्डाव	8.48	6.44	20.77	15.92	7.44
घोसी	5.87	5.99	4.62	5.71	4.98
बड़रांव	6.01	6.33	-	6.94	5.51
कोपागंज	15.93	16.95	12.31	10.61	16.35
परदहा	15.14	13.56	22.31	22.86	12.16
रतनपुरा	13.83	14.97	-	13.06	16.81
मुहम्मदाबाद गोहना	10.99	12.66	-	4.90	13.75
रानीपुर	10.90	11.98	8.46	4.49	12.89

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका, मऊ जनपद, 2020

खरीफ की सब्जियों का वितरण प्रतिरूप
जनपद - मऊ, वर्ष - 2020



बोड़ा— बोड़ा की जायद एवं खरीफ दोनों मौसमों में बुवाई की जाती है। बोड़ा प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत है। बोड़ा सूखे की परिस्थितियों को काफी हद तक सहन कर लेता है किन्तु ज्यादा सूखे की स्थिति में फसल खराब हो जाती है। छायादार स्थानों में भी इसे उगाया जा सकता है। ऊपरी भूमि के अतिरिक्त अच्छे जल निकासी वाली प्रायः सभी प्रकार की भूमि में इसे उगाया जा सकता है। खेत की अच्छी प्रकार से जुताई करके पाटा लगाकर मिट्टी की भुरभुरी बनाकर इसकी बुवाई करने से अच्छी फसल प्राप्त होती है। बोड़ा की बुवाई के लिए जायद की फसल हेतु फरवरी से मार्च का समय उपर्युक्त होता है एवं खरीफ के लिये जून से जुलाई तक का समय उत्तम होता है। प्रति एकड़ 10 किग्रा0 बीज की बुवाई की जाती है। जायद के लिए पूसा फागुनी 1552 तथा खरीफ के लिए पूसा दो फसली 5269 प्रजातियाँ अच्छी है। ये सभी प्रजातियाँ कृषि बीज केंद्रों पर आसानी से उपलब्ध हो जाती है। इसकी पैदावार 200 से 250 किण्टल प्रति एकड़ होती है। इसमें कुल लागत 5000 ₹ आती है और उत्पादन 40000 ₹ का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 35000 ₹ का लाभ मात्र 4 महीने में ही हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र के 64 हेक्टेयर भूमि पर इसकी



खेती की जाती है, जो कुल सब्जी क्षेत्र का 2.22 प्रतिशत है। इसका वितरण प्रायः वहीं मिलता है, जहाँ जायद और खरीफ ऋतु की सब्जियाँ बोई जाती हैं।

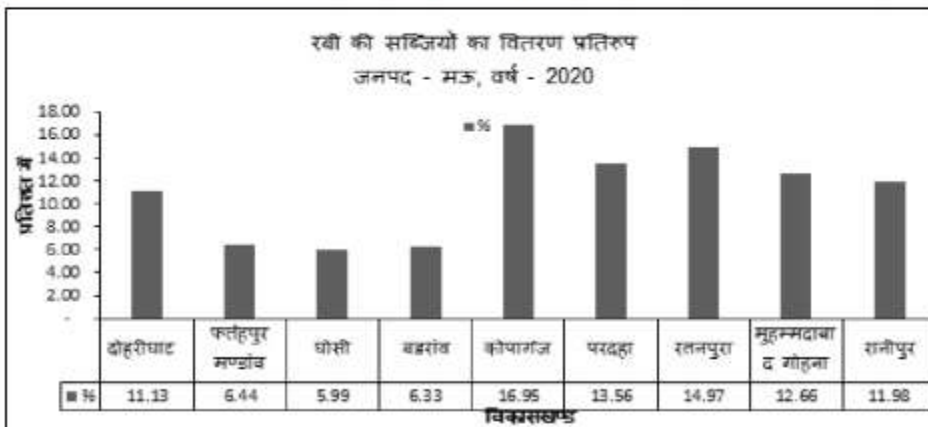
सेम- सेम की बुवाई खरीफ ऋतु में की जाती है। अध्ययन क्षेत्र के 23 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती की जाती है, जो कुल सब्जी क्षेत्र का 0.79 प्रतिशत है। इसमें कुछ प्रमुख विकास खण्ड पीपीगंज, घोसी, पट्टहा एवं रतनपुरा आदि में हैं। यह सभी विकासखण्ड अध्ययन क्षेत्र में मध्यवर्ती भाग में हैं।

बण्डा- जायद ऋतु की अत्यन्त ही लोक प्रिय सब्जी है। अध्ययन क्षेत्र के 18 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती की जाती है, इसमें कुल लागत प्रति एकड़ 1000 रु० आती है और उत्पादन 60000 रु० का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 50000 रु० का लाभ मात्र 5 महीने में ही हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र में इसका उत्पादन कुल सब्जी क्षेत्र का 0.62 प्रतिशत है। इसकी खेती वहीं की जाती है, जहाँ जायद ऋतु में अन्य सब्जियों की खेती की जाती है।

अरवी- अरवी की खेती जायद एवं खरीफ दोनों ऋतु में की जाती है। इसके पत्तियों तथा जड़ दोनों का उपयोग किया जाता है। इसमें प्रति एकड़ कुल लागत 5000 रु० आती है और उत्पादन 30000 रु० का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 25000 रु० का लाभ मात्र 4 महीने में ही हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र में 22 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती की जाती है, जो कुल सब्जी क्षेत्र का 0.76 प्रतिशत है। अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में अरवी की खेती की जाती है। यहाँ परिवहन, सिंचाई, बाजार, उपयुक्त भूमि, आदि सुविधाओं के कारण अरवी की खेती की जाती है।

तरौई- तरौई इसकी महत्वपूर्ण नकदी फसल है। इसकी खेती खरीफ ऋतु में होती है। इसकी सब्जी के अलावा इसके सूखे हुए रसे को बर्तन साफ करने, जूते के तलवे तथा उद्योगों में फिल्टर के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह कुकर विटैसी कुल का पौधा है, जिसकी दो प्रजातियाँ हैं। प्रथम घीया तरौई तथा दूसरी काली तरौई है। अध्ययन क्षेत्र में काली तरौई एवं घीया तरौई दोनों की खेती की जाती है। इसकी बुवाई ग्रीष्म ऋतु में जनवरी एवं मार्च तक एवं वर्षा ऋतु में जून से जुलाई तक होती है। एक हेक्टेयर में 4-5 किलोग्राम बीज लगता है। अध्ययन क्षेत्र में इसकी बुवाई खेतों में मचान बनाकर किया जाता है, क्योंकि इससे बरसात के दिनों में सब्जी प्रभावित नहीं होती है और उसके नीचे बची भूमि में सहगामी फसलें जैसे बोड़ा, सेम आदि की बुवाई कर दी जाती है। इसकी पैदावार 100 से 150 किण्टल प्रति एकड़ होती है। इसमें कुल लागत 17900 रु० आती है और उत्पादन 47900 रु० का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 30000 रु० का लाभ मात्र तीन महीने में ही हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र के 81 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती की जाती है, जो कुल सब्जी क्षेत्र का 2.81 प्रतिशत है। थोक व्यापारियों द्वारा मऊ, घोसी एवं चिरैयाकोट सब्जी मण्डी में विक्रय की जाती है।

रबी ऋतु की सब्जियाँ- रबी ऋतु में सब्जियों का उत्पादन अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में सघनता से की जाती है। इसमें प्रमुख गाँव अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में उत्तर और दक्षिण के एक पट्टी के रूप में मिलता है। इस क्षेत्र की भौगोलिक दशाएं मुख्यतः सुप्रवाहित धरातल, बलुई दोमट मिट्टी, सिंचाई की सुविधा, परिवहन की सुविधा विपणन की सुविधा आदि उत्पादन के लिए अनुकूल है। रबी ऋतु में औसत से अधिक 4 विकासखण्डों में जबकि औसत से कम शेष 5 विकासखण्डों में पाया जाता है। इस ऋतु में सबसे अधिक कोपागंज में 16.95 प्रतिशत तथा सबसे कम घोसी में 5.99 प्रतिशत विकासखण्डों में हैं। मध्यवर्ती भाग में कोपागंज एवं 4.2 परदहा विकासखण्ड उल्लेखनीय हैं। पश्चिमी मध्यवर्ती तथा दक्षिणी भाग में की ऋतु में सब्जी की खेती बहुत अधिक होती है। इन क्षेत्र में फतेहपुर मण्डाव घोसी बरसात आदि विकासखण्डों में रबी ऋतु में सब्जियों का क्षेत्र से भी कम है। रबी ऋतु में आलू, फूल गोभी, पत्ता गोभी, प्याज आदि हैं। (तालिका सं० 3.5)।





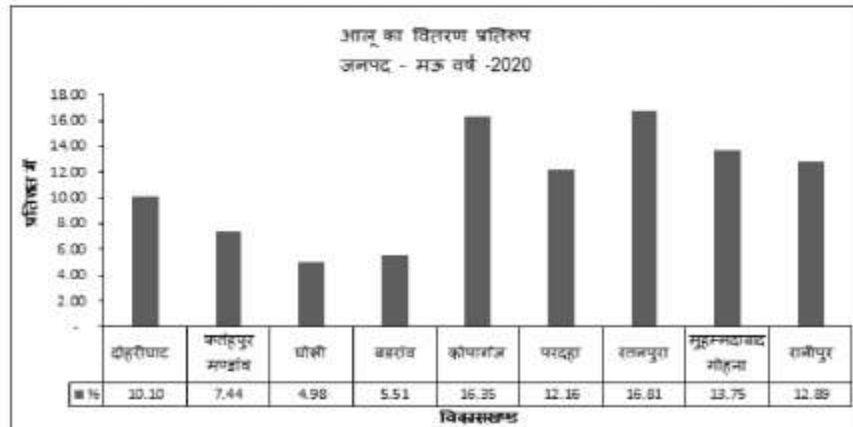
रबी ऋतु के सब्जियों के क्षेत्र का श्रेणीगत वितरण को देखा जाय तो 33.33 प्रतिशत विकासखण्डों में 0.08 प्रतिशत कम शुद्ध कृषि क्षेत्र पर, 22.22 प्रतिशत विकासखण्डों में 8 से 12 प्रतिशत शुद्ध कृषि क्षेत्र पर और सर्वाधिक 44.44 प्रतिशत विकासखण्ड में 12 प्रतिशत से अधिक शुद्ध कृषि क्षेत्र पर सब्जियों की खेती किया जाता है।

तालिका 6
रबी ऋतु में सब्जियों का श्रेणीगत वितरण

श्रेणी	शुद्ध कृषि क्षेत्र	संख्या	विकासखण्ड
न्यून	8 से कम	3	33.33
मध्यम	8-12	2	22.22
उच्च	12 से अधिक	4	44.44
	योग	9	100



आलू- आलू उपलब्ध आँकड़ों में यद्यपि सब्जी के अन्तर्गत नहीं रखा जाता है, फिर भी जन सामान्य सब्जी के रूप में इसका उपयोग करते हैं। यह शीत ऋतु की सर्वप्रमुख व्यापारिक फसल है। नवम्बर में बोयी जाती है और फरवरी मार्च में खुदाई कर लिया जाता है। सकल बोये गये क्षेत्र का 2.88 प्रतिशत एवं शुद्ध बोये गये क्षेत्र का 4.90 प्रतिशत तथा रबी शस्य क्षेत्र का 5.75 प्रतिशत (1513 हेक्टेयर) पर आलू की खेती होती है परन्तु सम्पूर्ण नकदी क्षेत्र का 14.13 प्रतिशत आलू के अन्तर्गत है। यह शीघ्र विनष्ट होने वाली सब्जी नहीं है इसलिए किसान आवश्यकता अनुसार इसका विक्रय करते हैं। कुल सब्जियों के क्षेत्र में आलू का अंश 52.46 प्रतिशत मुहम्मदाबाद गोहना, मऊ, घोसी एवं चिरैयाकोट के सब्जी व्यापारी गाँव में पहुँच कर खेत में ही आंकलन (कूत) के आधार पर आलू खरीद लेते हैं। जिसके कारण कृषकों को उत्पादन की अधिक मात्रा प्राप्त होती है और कम श्रम का उपयोग करते हुए का उपयोग करते हुए बाजार में बेचने से किसी कठिनाई का अनुभव नहीं करते हैं। जो बाजार में ले जाकर स्वयं आलू का विक्रय करते हैं। फलतः उनको अपेक्षाकृत अधिक लाभ मिलता है, जबकि खेत में बेचने वाले कृषक को अपेक्षाकृत कम लाभ मिलता है। कुछ कृषक शीतगृहों में भी आलू रख देते हैं और बीज के रूप में उसका विक्रय करते हैं जिन्हें और अधिक लाभ मिलता है।





आलू क्षेत्र का वितरण देखा जाय तो क्षेत्रीय औसत से अधिक आलू क्षेत्र 55.55 प्रतिशत विकासखण्ड और औसत से कम 44.44 प्रतिशत में मिलता है। इसके वितरण में स्तरीय की विषमता मिलती है। एक ओर कोपागंज एवं रतनपुरा में क्रमशः 16.35 एवं 16.18 प्रतिशत आलू क्षेत्र है, तो घोसी 4.98 प्रतिशत एवं बडरांव में 5.51 प्रतिशत आलू फसल क्षेत्र के अन्तर्गत है। प्रत्यक्ष देखा जाये तो ताल नरजा के समीप मटियार मिट्टी वाला क्षेत्र जबकि घोसी एवं बडराव बलुई दोमट मिट्टी वाला क्षेत्र है। आलू उत्पादक प्रमुख विकासखण्ड अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में उत्तर और दक्षिण के एक पट्टी के रूप में मिलता है। इस क्षेत्र की भौगोलिक दशाएं मुख्यतः सुप्रवाहित धरातल, बलुई दोमट मिट्टी, सिंचाई की सुविधा, परिवहन की सुविधा, विपणन की सुविधा आदि आलू उत्पादन के लिए अनुकूल हैं। इस क्षेत्र में 16.81 प्रतिशत रतनपुरा 16.35 प्रतिशत कोपागंज, 13.75 प्रतिशत मुरादाबाद गोहना, रानीपुर में 12.89 प्रतिशत कृषिगत क्षेत्र आलू के अन्तर्गत है। रतनपुरा, कोपागंज इस क्षेत्र के उल्लेखनीय विकासखण्ड हैं, जहाँ 16 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र पर आलू की खेती की जाती है। पूर्वी भाग तथा दक्षिणी भाग में आलू की खेती बहुत कम होती है। इन क्षेत्रों में फतेहपुर मंडराव, घोसी एवं बडरांव आदि विकासखण्डों में आलू का क्षेत्र 8 प्रतिशत से भी कम है (तालिका 6)। स्पष्ट है कि इन विकासखण्डों में आलू की खेती अपितु निजी उपभोग के लिए ही की जाती है। आलू क्षेत्र के श्रेणीगत वितरण को देखा जाये तो 33.33 प्रतिशत विकासखण्डों में 8 प्रतिशत से कम, 44.44 प्रतिशत विकासखण्ड में 8 से 16 प्रतिशत, 22.22 विकासखण्डों में 16 प्रतिशत से अधिक आलू उगाया जाता है।

तालिका 3.6

आलू क्षेत्र का श्रेणीगत वितरण

श्रेणी	शुद्ध कृषि क्षेत्र से प्रतिशत	विकास खण्ड	
		संख्या	प्रतिशत
न्यून	8 से कम	3	33.33
मध्यम	8-16	4	44.44
उच्च	16 से अधिक	2	22.22
	योग	9	100

बैंगन— बैंगन अत्यन्त ही महत्वपूर्ण सब्जी है। पहले लोगों की धारणा थी, कि बैंगन में पौष्टिक तत्वों की कमी होती है। परन्तु यह धारणा गलत साबित हुई है। बैंगन कार्बोज, कैल्शियम, फास्फोरस, विटामिन 'ए', लोहा और विटामिन 'सी' का एक अच्छा स्रोत है। इसके अतिरिक्त बैंगन का प्रयोग आयुर्वेद में औषधि के रूप में किया जाता है। बैंगन की अच्छी उपज के लिए उपजाऊ बलुई दोमट मिट्टी की प्रधानता है।

बैंगन रबी ऋतु में उगायी जाने वाली प्रमुख सब्जी है। लेकिन बैंगन की कृषि अब तीनों ऋतुओं में किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में अवस्थापनात्मक तत्वों की बहुलता है। सिंचाई की सुविधा परिवहन की सुविधा, विपणन केन्द्रों से निकटता, मुख्य सड़क मार्ग पर मऊ, मुहम्मदाबाद गोहना, चिरैयाकोट एवं घोसी मण्डी, सुप्रवाहित धरातल, उन्नतशील बीजों की उपलब्धता के कारण इसका उत्पादन अपेक्षा अधिक होता है। कुल सब्जियों के क्षेत्र का 4.16 प्रतिशत भाग बैंगन के अन्तर्गत आता है। बैंगन की कृषि मुख्यतः लघु एवं सीमान्त कृषक ही करते हैं, जिनके पास पारिवारिक श्रम सुविधा उपलब्ध है, क्योंकि पौधे लग जाने के बाद गुड़ाई, निकाई, मिट्टी बढ़ाई, तोड़ाई, आदि कार्यों के लिए श्रम की आवश्यकता होती है। क्षेत्र के मुख्यतः मध्य भाग में राष्ट्रीय राजमार्ग के दोनों किनारों पर स्थित ग्रामों में बैंगन की कृषि की जाती है।

टमाटर— अध्ययन क्षेत्र में पहले देशी टमाटर की ही खेती होती थी। इसकी न सिर्फ उत्पादकता कम थी, अपितु टिकाऊपन का भी गुण नहीं था। क्योंकि इसका छिलका अत्यन्त पतला होता है। न बिक पाने की स्थिति में उत्पाद शीघ्र ही विनष्ट हो जाता था। परन्तु अब मुख्यतः हाईब्रिड टमाटर की ही कृषि होती है। अल्प अवधि में तैयार होने वाली टमाटर की फसल का उत्पादन लाभदायक सिद्ध हो रहा है। एक एकड़ में औसतन लागत 19200 रु० आती है और उत्पादन 53000 रु० का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 33800 रु० की शुद्ध आय मात्र तीन माह में प्राप्त होती है। प्रत्येक किसान सीमित भूमि पर ही अन्य सब्जियों के साथ टमाटर की कृषि करता है। टमाटर का कुल क्षेत्रफल 61 हे० है, जो सम्पूर्ण सब्जी क्षेत्र का 2.11 प्रतिशत है। टमाटर की कृषि उन्हीं ग्रामों में होती है। जहाँ रबी ऋतु की अन्य सब्जियों की कृषि होती है। यह वह क्षेत्र है, जो कोपागंज विकासखण्ड एवं जिला मुख्यालय के समीप पड़ता है तथा इस क्षेत्र से ही प्रमुख सड़क मार्ग गुजरता है, साथ ही इसी क्षेत्र से मुख्य सड़क से कई ग्रामों में ग्रामीण सड़कें निकलती हैं। स्थानीय मऊ सब्जी मण्डी के अतिरिक्त उत्तर में घोसी, दोहरीघाट एवं मधुवन आदि जगहों पर इसका विक्रय होता है। इस क्षेत्र में सिंचाई की भी अपेक्षाकृत बेहतर सुविधा उपलब्ध है।

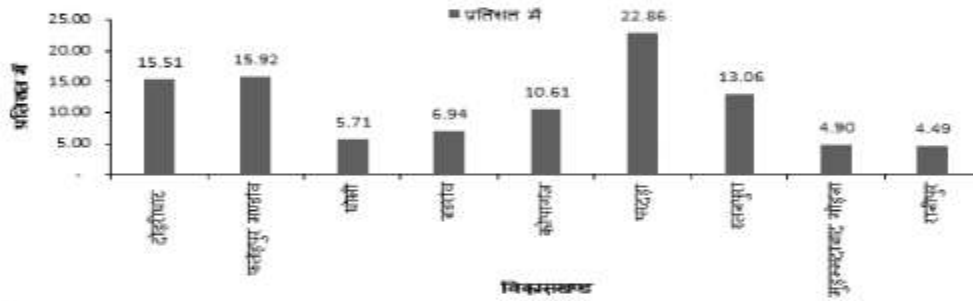
गोभी— यह रबी ऋतु की अत्यन्त लोकप्रिय सब्जी है। पोषण के दृष्टि से फूल गोभी अधिक समृद्ध है, इसमें विटामिन 'सी' स्थायी रूप से पाया जाता है। पत्ता गोभी बहुत ही लोकप्रिय सब्जी है। पत्ता गोभी अत्यन्त पोषक सब्जी है जो विशेषकर विटामिन



‘ए’ और ‘सी’ युक्त होती है। गोभी की छः विशिष्ट किस्में बोई जाती हैं। पूसा, आर्ली, पूसा दीपाली, इम्प्रूव्ड जापानीज, पूसा हाईब्रिड-2, पूसा शरद, पूसा शुभ्रा, पूसा सिंथेटिक, पूसा स्नोवाल, पूसा अगेती, गोल्डन एकर आदि है। गोभी की रोपाई नवम्बर से दिसम्बर में कर दी जाती है। अल्प अवधि में तैयार होने वाली इस फसल की कृषि अधिक लाभदायक सिद्ध हो रही है। एक एकड़ में औसतन सम्पूर्ण लागत 8620 रु० आती है और उत्पादन 88500 रु० का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 79800 रु० की शुद्ध आय मात्र चार माह में प्राप्त होती है। अध्ययन क्षेत्र में गोभी का कुल क्षेत्रफल 180 हेक्टेयर है, जो सम्पूर्ण सब्जी क्षेत्र का 6.28 प्रतिशत है, गोभी की कृषि प्रायः सभी विकासखण्डों में नहीं होती है। इसका वितरण प्रायः वही मिलता है, जहाँ रबी ऋतु की अन्य सब्जियों की कृषि होती है। यह वह क्षेत्र है जो जनपद मुख्यालय के समीप पड़ता है तथा इस क्षेत्र से ही प्रमुख सड़क मार्ग गुजरता है, साथ ही इसी क्षेत्र से मुख्य सड़क से कई ग्रामों में ग्रामीण सड़कें निकलती हैं। स्थानीय मऊ सब्जी मण्डी के अतिरिक्त उत्तर में आदि जगहों पर इसका विक्रय होता है। इस क्षेत्र में सिंचाई की भी अपेक्षाकृत बेहतर सुविधा उपलब्ध है।

जायद ऋतु की सब्जियाँ— जायद ऋतु में अधिक सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है इसलिए सब्जी क्षेत्र वही मिलता है, जहाँ पर्याप्त और भरोसेमन्द सिंचाई सुविधा उपलब्ध है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि जायद कालीन सब्जियाँ उन भागों में उगायी जाती हैं, जो बाढ़ सुरक्षित दोमट मृदा वाले सिंचाई युक्त परिवहन सुविधा सम्पन्न एवं बाजार केन्द्रों की निकटता वाला है। अध्ययन क्षेत्र के पूर्वार्द्ध भाग में चूँकि जायद ऋतु शुष्क है, इसलिए बिना सिंचाई के जायद ऋतु की सब्जियों की कृषि नहीं हो सकती है (तालिका सं० 7)। 44.44 प्रतिशत विकासखण्डों में 10 प्रतिशत से कम, 22.22 प्रतिशत विकासखण्डों में 10 से 15 प्रतिशत, 33.33 प्रतिशत विकासखण्डों में 15 प्रतिशत से अधिक है।

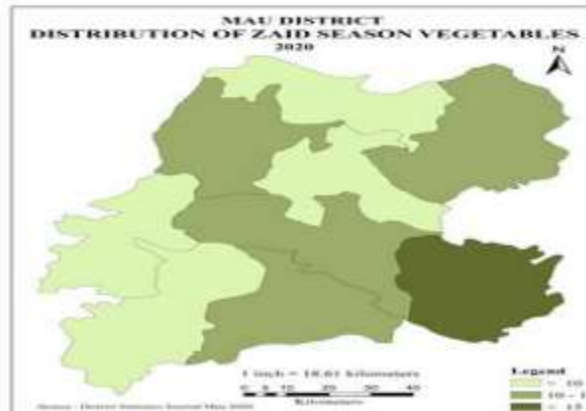
जायद की सब्जियों का वितरण,
जनपद - मऊ, वर्ष - 2020



तालिका 7

जायद ऋतु में सब्जियों का श्रेणीगत वितरण

श्रेणी	शुद्ध कृषि क्षेत्र से प्रतिशत	विकास खण्ड	
		संख्या	प्रतिशत
न्यून	10 से कम	4	44.44
मध्यम	10-15	2	22.22
उच्च	15 से अधिक	3	33.33
	योग	9	100





करेला- इसकी बुआई ग्रीष्म ऋतु के लिए जनवरी से अप्रैल तथा वर्षा ऋतु के लिए जून से जुलाई तक होती है। प्रति एकड़ भूमि में 4-5 किलो बीज बोया जाता है। सामान्य रूप से 20 से 25 टन गोबर या कम्पोस्ट की खाद तैयार करके मिट्टी में मिलाकर तैयार किया जाता है। संकर ओज, एक-1 हाइब्रिड प्रजाति के बीजों से देधी करेला की अपेक्षा अधिक पैदावार प्राप्त हो रही है, लेकिन इन प्रजातियों की फसलों में अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है इसलिए गर्मी के दिनों में हर पाँचवें दिन सिंचाई करनी पड़ती है। बोने के 75-90 दिन के बाद तोड़ाई शुरू हो जाती है। इसकी तोड़ाई हर तीसरे दिन होती है। इसकी कृषि में प्रति एकड़ लागत 11800 प्रति रू0 तथा उत्पादन 56600 रू0 का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ शुद्ध लाभ 44800 रू0 होता है। इसके साथ ही सहगामी फसलें बोझ भी उगाया जाता है। इसी के लागत से बोड़े की फसल तैयार हो जाती है, जिससे शुद्ध 18500 रू0 का अतिरिक्त लाभ हो जाता है। यह अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती एवं पश्चिमी भाग में भी कृषि की जाती है। कुल लागत इसका कुल उत्पादन 60 से 70 किण्टल तक होता है। अध्ययन क्षेत्र में करेला का कुल क्षेत्रफल 102 हेक्टेयर है। जो सम्पूर्ण सब्जी क्षेत्र का 3.53 प्रतिशत है। यहाँ सिंचाई की सुविधा, परिवहन की सुविधा एवं बाजार की निकटता के कारण करेले की खेती अधिक किया जाता है।

भिण्डी- यह अध्ययन क्षेत्र की लोकप्रिय सब्जी है, जो अध्ययन क्षेत्र के लगभग सभी भागों में उगायी जाती है। भिण्डी कच्चे हरे फल के लिए ही नहीं बल्कि इसका तना गुड़ एवं षक्कर साफ करने में भी प्रयोग किया जाता है। ताजी भिण्डी के निर्यात की काफी सम्भावनाएं हैं। उन्नतिशील प्रजातियों में बी0आर0ओ0-6, बी0आर0ओ0-5, आई0आई0 बी0 आर0-10 है। भिण्डी के लिए लम्बे गर्म मौसम की आवश्यकता पड़ती है। इसकी खेती के लिए औसत तापमान 25-30 से0ग्रे0 उपयुक्त माना गया है। इसकी खेती दोमट या बलुई दोमट मिट्टी में सफलतापूर्वक किया जाता है। बरसात की फसल और ग्रीष्म ऋतु की फसल की बुआई फरवरी एवं मार्च में करते हैं। एक एकड़ भूमि में 5-6 किलो ग्राम तक बीज बोया जाता है। भिण्डी की बुआई समतल क्यारियों एवं मेड़ों पर करते हैं। जहाँ भारी वर्षा तथा जल निकास का अभाव हो वहाँ बुवाई मेड़ों पर करते हैं। भिण्डी की अच्छी पैदावार के लिए 10-15 टन गोबर की खाद, 50 कि0ग्रा0 नाईट्रोजन, 25 कि0ग्रा0 पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से दिया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में भिण्डी का कुल क्षेत्रफल 51 हेक्टेयर है। सम्पूर्ण सब्जी क्षेत्र का 1.77 प्रतिशत है। इसकी बुआई अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण भाग में मधुबन बडरांव, फतेहपुर मण्डाव, मध्य क्षेत्र में परदहा, घोसी एवं पश्चिमी क्षेत्र में रानीपुर और उत्तरी क्षेत्र में मुहम्मदाबाद गोहना आदि में किया जाता है। इसका विक्रय मुख्यतः स्थानीय बाजारों एवं सब्जी मण्डियों में किया जाता है।

लौकी- लौकी गर्मियों की महत्वपूर्ण सब्जियों में आती है। इसे बरसात में भी उगाया जा सकता है। ये गर्म जलवायु की फसलें हैं तथा इन्हें पाले से अत्यधिक हानि होती है। इन्हें सभी प्रकार की भूमियों में उगाया जा सकता है लेकिन बलुई दोमट मिट्टी इनके लिए उपयुक्त है। इसकी खेती वर्षभर की जा सकती है। लेकिन मुख्य रूप से फरवरी के मध्य से मार्च के पहले सप्ताह तथा बरसात की फसल जुलाई-अगस्त के महीने में लगाई जा सकती है। लौकी की कुछ प्रमुख प्रजातियाँ पूसा समर प्रोलीफिक लॉग, पूसा समर प्रोलीफिक राउण्ड, पूसा नवीन, पूसा संदेश, पूसा संकर-3 है। एक हेक्टेयर में 4-5 किलो बीज लगता है। अध्ययन क्षेत्र में इसकी बोवाई खेतों में मचान बनाकर किया जाता है, क्योंकि इससे बरसात के दिनों में सब्जी प्रभावित नहीं होती है और इसकी पैदावार 200 से 250 कुन्तल प्रति एकड़ होती है। इसमें कुल लागत 4250 रू0 आती है और उत्पादन 52500 रू0 का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 48350 रू0 का लाभ मात्र 4 महीने में ही हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र के 140 हेक्टर भूमि पर इसकी खेती की जाती है, जो कुल सब्जी क्षेत्र का 4.85 प्रतिशत है। इसका वितरण प्रायः वहीं मिलता है, जहाँ रबी ऋतु की अन्य सब्जियों की कृषि होती है। यह वह क्षेत्र है, जो जनपद मुख्यालय के समीप पड़ता है तथा इस क्षेत्र से ही प्रमुख सड़क मार्ग गुजरता है, साथ ही इसी क्षेत्र से मुख्य सड़कों से कई ग्रामों में ग्रामीण सड़कें निकलती हैं। स्थानीय मऊ सब्जी मण्डी के अतिरिक्त मुहम्मदाबाद गोहना, रानीपुर चिरैयाकोट, मधुबन, घोसी, कोपागंज में इसका विक्रय होता है। इस क्षेत्र में सिंचाई की भी अपेक्षाकृत बेहतर सुविधा उपलब्ध है। अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग तथा पश्चिमी भागों में लौकी की खेती की जाती है। पश्चिमी भाग में बायी जाने वाली लौकी स्थानीय बाजार सरसेना, काझा, खुरहट में भी विक्रय की जाती है एवं थोक व्यापारियों द्वारा मुहम्मदाबाद गोहना एवं चिरैयाकोट सब्जी मण्डियों में विक्रय की जाती है।

परवल- यह जायद ऋतु की अत्यन्त लोकप्रिय सब्जी है। इसकी खेती नदियों के किनारे होती है। इसके लिए बलुई मिट्टी ही उपयुक्त होता है। इसमें सिंचाई की आवश्यकता कम होती है। इसकी खेती में बहुत कम लागत आती है। इसके तना को काटकर जमीन में रोपाई की जाती है। यह अध्ययन क्षेत्र के 130 हेक्टेयर क्षेत्र पर उत्पादित की जाती हैं जो क्षेत्र में उत्पादित कुल सब्जियों का 4.51 प्रतिशत है। परवल 4 महीना में तैयार होने वाली फसल है। इसकी कृषि अधिक लाभदायक सिद्ध हो रही है। उन्नत शील बीजों के कारण उत्पादन अधिक हो रहा है। एक एकड़ की खेती करने में औसतन सम्पूर्ण लागत 2900 रू0 आती है और उत्पादन 31500 रू0 का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 28600 रू0 की शुद्ध आय मात्र छः माह में प्राप्त होती है।

**शाक-सब्जियाँ-**

पालक- पत्ती वाल सब्जियों में कैल्शियम, आयरन, खनिज तत्व व विटामिन 'ए', 'बी' कॉम्प्लैक्स व 'सी' बहुतायत में पाये जाते हैं। पत्ती वाली सब्जियों में पालक का महत्वपूर्ण स्थान है, जो कि मुख्यतः अपनी मुलायम एवं कोमल पत्तियों के लिये उगाया जाता है। पालक का कोमल तना भी प्रयोग में लाया जाता है। पालक की खेती सर्दियों में अधिक की जाती है। पालक की खेती पूरे साल की जा सकती है परन्तु अत्यधिक तापक्रम इसके लिये हानिकारक होता है अतः सर्दियों का महीना पालक की खेती के लिये उपयुक्त होता है। अध्ययन क्षेत्र में पालक की बुआई वर्ष में तीन बार की जाती है। इसकी बुवाई फरवरी-मार्च, जून-जुलाई, अक्टूबर-नवम्बर में की जाती है। बीज की बुआई तैयार खेत में छिटकाव विधि द्वारा भी की जा सकती है, परन्तु पालक की बुवाई आसानी से की जाती है। एक एकड़ खेत की बुवाई के लिए 10-15 किग्रा0 बीज लगता है। पालक की बहुत सी प्रजातियाँ उगाई जाती हैं। पालक की कुछ मुख्य प्रजातियाँ निम्नलिखित हैं। आल ग्रीन, पूसा ज्योति, पूसा हरित, पूसा भारती, जोवनेर ग्रीन आदि है। इसकी पैदावार 100 से 150 कुन्तल प्रति एकड़ होती है। इसमें प्रति एकड़ कुल लागत 5000 रु0 आती है और उत्पादन 34000 रु0 का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 29000 रु0 का लाभ मात्र 2 महीने में ही हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र के 5 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती की जाती है, जो कुल सब्जी क्षेत्र का 0.32 प्रतिशत है। इसका वितरण प्रायः वहीं मिलता है, जहाँ रबी, खरीफ और जायद ऋतु की सब्जियाँ बोई जाती हैं।

मूली- मूली एक महत्वपूर्ण जड़वाली सब्जी है। यह जल्दी तैयार हो जाती है। अतः इसे अन्य सब्जी अथवा फसल की पंक्तियों के बीच उपफसल के रूप में भी उगाया जा सकता है। मूली को कच्चा सलाद, के रूप में बनाकर, पराठों में भरकर अथवा अचार में भी प्रयोग किया जाता है। मूली सभी प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है, लेकिन बलुई दोमट मिट्टी जिसमें जीवांश की अधिकता हो, सर्वोत्तम होती है। भारी मिट्टी में इसकी जड़े कड़ी और बेडौल हो जाती है, मूली बोने से पहले भूमि को चार से छः बार जुताई कर मुरमुरी कर लिया जाता है। गोबर तथा पत्तियों की खाद भूमि को तैयार करते समय खेत में मिला दिया जाता है। मूली की फसल पूरे वर्ष उगाई जा सकती है। व्यावसायिक स्तर पर मूली की बुआई अगस्त से नम्बर तक की जाती है परन्तु इसकी खेती पूरे वर्ष की जाती है।

एक एकड़ खेत की बुवाई के लिए 5-10 किग्रा0 बीज लगता है। मूली की बहुत सी प्रजातियाँ कल्याणपुर नं0-1, पूसा रश्मि, हिसार सलेक्सन-1, जापानी व्हाइट, व्हाइट आसिकिल, रफिड रेडव्हाइट टिप्ड, पूसा चेतकी, पूसा हिमानी, पूसा देशी, आर्कानिशांत मीनू अर्ली और जौनपुरी आदि उगाई जाती है। इसकी पैदावार 200 से 250 कुन्तल प्रति एकड़ होती है। इसमें कुल लागत 6000 रु0 आती है और उत्पादन 30000 रु0 का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 24000 रु0 का लाभ मात्र 2 महीने में ही हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र के 26 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती की जाती है, जो कुल सब्जी क्षेत्र का 0.90 प्रतिशत है। इसका वितरण प्रायः वहीं मिलता है, जहाँ रबी, खरीफ और जायद ऋतु की सब्जियाँ बोई जाती हैं।

चौलाई- हरी शाक-सब्जियों में चौलाई अत्यन्त ही लोकप्रिय एवं लाभदायक सब्जी है। इसकी खेती तीनों ऋतुओं की जाती है। इसमें विटामिन 'सी' 'ए' 'बी' कॉम्प्लैक्स बहुतायत में पाये जाते हैं। पत्ती वाली सब्जियों में चौलाई का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें कुल लागत 5000 रु0 आती है और उत्पादन 30000 रु0 का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 25000 रु0 का लाभ मात्र 2 महीने में ही हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र के 24 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती की जाती है, जो सम्पूर्ण सब्जी क्षेत्र का 0.83 प्रतिशत है। अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती एवं पूर्वी भाग में खेती की जाती है।

गाजर- यह एक जड़वाली महत्वपूर्ण सब्जी है, इसका प्रयोग सलाद, अचार, जूस एवं मिठाई आदि के रूप में किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में गाजर की कृषि की जाती है। इसमें प्रति एकड़ कुल लागत 7000 रु0 आती है और उत्पादन 450000 रु0 का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 38000 रु0 का लाभ मात्र 2 महीने में ही हो जाता है।

शलजम एवं चुकन्दर- रबी ऋतु में शलजम और चुकन्दर की खेती की जाती है। जिसमें विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसका प्रयोग सलाद, अचार एवं जूस आदि के रूप में किया जाता है। इसमें कुल लागत 8000 रु0 आती है और उत्पादन 50000 रु0 का होता है। इस प्रकार प्रति एकड़ 42000 रु0 का लाभ मात्र 3 महीने में ही हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र के 9 हेक्टेयर भूमि पर (चुकन्दर) एवं 6 हेक्टेयर भूमि पर (शलजम) की खेती की जाती है। सम्पूर्ण सब्जी क्षेत्र का 0.31 प्रतिशत चुकन्दर, के रूप में 21 प्रतिशत शलजम के रूप में उत्पादन किया जाता है।

गन्ना- मऊ से 25 किमी0 दूर स्थित घोसी चीनी मिल के चालू रहने पर यहाँ के मध्यम एवं अर्द्ध मध्यम कृषक गन्ना की व्यापारिक कृषि करते हैं इस चीनी मील के संचालन से क्षेत्र के गन्ना की कृषि समृद्ध हुई है। लेकिन अब विक्रय की समस्या सबसे बड़ी बाधा बन गयी है, इसीलिए गन्ना के कृषि क्षेत्रफल में कमी आयी है। गन्ना क्षेत्र के वितरण से स्पष्ट है कि गन्ना का मुख्य क्षेत्र उत्तरी-पूर्वी एवं मध्यवर्ती भाग और मध्यवर्ती-पश्चिमी भाग में सर्वाधिक किया जाता है।



तालिका 8

गन्ना फसल क्षेत्र का श्रेणीगत वितरण

श्रेणी	शुद्ध कृषि क्षेत्र से प्रतिशत	विकास खण्ड	
		संख्या	प्रतिशत
न्यून	10 से कम	3	33.33
मध्यम	10-12	3	33.33
उच्च	14 से अधिक	3	33.33
	योग	9	100

अध्ययन क्षेत्र के मुहम्मदाबाद गोहना विकासखण्ड में 14.30 प्रतिशत गन्ना क्षेत्र क्षेत्रीय औसत से अधिक है, जबकि घोसी में 7.60 प्रतिशत क्षेत्र पर गन्ना उत्पादन होता है जो क्षेत्रीय औसत से कम है। यह इस तथ्य को रेखांकित करता है कि गन्ना के उत्पादन में काफी अन्तर है।

तालिका स0 -9

मऊ जनपद में व्यापारिक फसलों का वितरण प्रतिखण्ड

विकासखण्ड	मक्का का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	गन्ना का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	कुल तिलहन का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	सरसों का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	मूंगफली का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	कुल नगदी फसलों का क्षेत्रफल (प्रतिशत में)
दोहरीघाट	27.11	13.23	35.41	24.08	51.52	15.45
फतेहपुर मंडाव	26.34	10.69	-	-	-	9.30
घोसी	2.81	7.60	14.41	7.69	22.08	7.39
बडराव	2.30	9.86	24.38	19.73	26.41	9.60
कोपागंज	5.12	9.48	5.34	10.03	-	11.13
घरदहा	7.16	10.60	8.01	15.05	-	11.34
रतनपुरा	1.02	10.81	10.50	19.73	-	11.87
मुहम्मदाबाद गोहना	23.02	14.30	-	-	-	12.48
शानीपुर	5.12	13.42	1.96	3.68	-	11.44

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका, मऊ जनपद, 2020

कुल नकदी फसल- विभिन्न नकदी फसलों के पृथक-पृथक क्षेत्रीय वितरण के पश्चात् यहाँ सभी नकदी फसलों के सम्मिलित क्षेत्र के वितरण प्रतिखण्ड का विश्लेषण किया गया है, क्योंकि यही व्यापारीकरण का संयुक्त चित्र प्रस्तुत करता है। समस्त नकदी फसलों के क्षेत्र का श्रेणीगत वितरण प्रदर्शित किया गया है, जिसमें प्रखर असमानता, विषमता, दृष्टिगोचर होती है। एक ओर दोहरीघाट विकासखण्ड में नकदी फसलों का क्षेत्र 15.45 प्रतिशत है, तो दूसरी ओर घोसी विकासखण्ड में 7.39 प्रतिशत तक कृषि क्षेत्र नकदी फसलों के अधीन है।





अध्ययन क्षेत्र में सकल बोयी गयी भूमि का 12.94 प्रतिशत एवं शुद्ध बोये गये क्षेत्र का 21.90 प्रतिशत भाग पर नकदी फसलों के अन्तर्गत कृषि की जाती है। क्षेत्र के 22.22 विकासखण्डों में क्षेत्रीय औसत से अधिक एवं 78 प्रतिशत विकासखण्डों में औसत से कम नकदी क्षेत्र मिलता है (तालिका सं0 3.13)। अध्ययन क्षेत्र के 23.3 प्रतिशत ग्रामों में नकदी शस्य क्षेत्र सकल बोये गये क्षेत्र का 5.0 प्रतिशत से कम है, जबकि 33.33 प्रतिशत विकासखण्डों में 10 प्रतिशत से कम, 44.44 प्रतिशत विकासखण्डों में 10 से 12 प्रतिशत, 22.22 प्रतिशत विकासखण्डों में 12 प्रतिशत से अधिक नगदी फसल का उत्पादन किया जाता है। नकदी फसल क्षेत्र की प्रधानता वाले विकासखण्डों का वितरण यद्यपि यत्र-तत्र प्रकीर्ण है, तथापि इसका सघन वितरण अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में मिलता है। यहाँ नकदी क्षेत्र के अधिकता का प्रमुख कारण उपयुक्त दोमट मृदा, सिंचाई की व्यवस्था सड़क परिवहन की सुविधा, बाजार की निकटता सब्जी मण्डियाँ इसी क्षेत्री से गुजरने वाले मार्ग पर स्थित है। यहाँ विविध प्रकार की सब्जियों एवं व्यापारिक फसलों की कृषि सफलतापूर्वक की जा रही है। दोहरीघाट में 15.45 प्रतिशत, कोपागंज में 11.13 प्रतिशत परदहा में 11.34 प्रतिशत रतनपुरा में 11.87 प्रतिशत मुहम्मदाबाद गोहना में 12.48 प्रतिशत एवं रानीपुर में 11.44 प्रतिशत नकदी शस्य क्षेत्र मिलता है। ये सभी विकासखण्ड सब्जी के साथ ही साथ विविध प्रकार के नकदी फसलों के उत्पादन में भी प्रमुख हैं। इन विकासखण्डों के अतिरिक्त बड़राव में 9.60 प्रतिशत, फतेहपुर मंडाव में 9.30 प्रतिशत और घोसी में 7.39 प्रतिशत नकदी शस्य का उत्पादन होता है। नकदी शस्य क्षेत्र की प्रधानता वाला दूसरा प्रमुख क्षेत्र घाघरा नदी खादर क्षेत्र में है। यहाँ यह तथ्य उल्लेखनीय है कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में तीन दशक पूर्व तक आवश्यकता भर का खाद्यान्न उत्पादन सम्भव नहीं था। किन्तु वर्तमान में नदियों के किनारे तटबंधों के निर्माण के कारण बाढ़ सुरक्षा हो जाने से यह क्षेत्र नकदी फसल उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण हो गया है।

तालिका सं0 10

नकदी फसल क्षेत्र का श्रेणीगत वितरण

श्रेणी	शुद्ध कृषि क्षेत्र से प्रतिशत	विकासखण्ड	
		संख्या	प्रतिशत
न्यून	10 से कम	3	33.33
मध्यम	10-12	4	44.44
उच्च	12 से अधिक	2	22.22
	योग	9	100.00



संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पटेल, आर0बी0 (1984) : ग्रामीण विकास में अवस्थापना तत्वों की भूमिका, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, पृ0 24.
2. पटेल आर0बी0 (1984) : ग्रामीण विकास में अवस्थापना तत्वों की भूमिका, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, पृ0 34.
3. पाण्डेय, श्रीकान्त (1980) : फरेन्दा तहसील (जनपद गोरखपुर) में भूमि उपयोग, शोध प्रबन्ध गोरखपुर विश्वविद्यालय, पृ0 19.



4. मिश्र, श्रीकान्त (1976) : भारत में कृषि विकास, दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लि0, नई दिल्ली, पृ0 29.
5. चौहान, शिवध्यान सिंह (1974) : भारतीय परिवहन व्यवस्था उ0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, पृ0 1.
6. व्यास, भगवती लाल (1982) : शिक्षक एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम, योजना वर्ष 26, अंक 20, पृ0 31.
7. शर्मा, एच0, (1978) : "भारतीय अर्थशास्त्र साहित्य भवन आगरा, पृ0 266.
8. Banavia, M.R., (1958) : The Economics of Transports, p.2.
9. Connor, A.M.O. (1965) : "New Railway Construction and the pattern of Economic Development in East Africa" Transaction L.B.C. No 36. p.21.
10. Dantawal M.L. (1975) : Incentives and Disincentives in Indian Agriculture, Indian Journal of Agricultural Economics Vol 22. pp . 1-25.
11. Ghosal, S.N. (1972) : Agricultural Financing in India, Asia Publishing House, New Delhi, p.13.
12. Khan H.D. N.A. B.A.R.D. Yojana , Vol . 27. No. 20. p.15
13. Mamoria, C.B. (1975) : Geography of India (Agricultural Geography) Shivolal Agrawal, Company Educational Poblisshess, Agra, p. 218.
14. Milane, A.M. (1955) : "The Economics of Inland Transport" pp. 22-24.
